



रेनी: द्वितीय (मबजक बख्या) इब्ताहा भाथ-5 गुरु गोबिंद

सिंह का जन्म और शक्ति
खल

प्रभु का जीवन,



क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 1-15 शब्दों में दीजिए -

1. गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था? उनकी माता का नाम भी बताइए।

की जन्म तिथि - गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर को हुआ 1666 ई. में पटना (बिहार की राजधानी) की स्थापना हुई।

था। उनके पिता का नाम गुरु तेग बहादुर जी और माता का नाम गुजरी था।

2. गुरु गोबिंद राय ने चीन के खिलाफ लड़ाई में कौन से खेल खेले?

उत्तर: जंगल के बीच में गुरुजी अपने शिष्यों को दौड़ाते और कुश्ती करवाते थे और अपने शिष्यों के बच्चों को शिक्षा भी देते थे।

वे दो जनजातियों को विभाजित करके उन्हें नकली युद्ध भी लड़ने पर मजबूर करते हैं।

3. गुरु गोबिंद सिंह राय जी ने लोगों को बक-बक की बुराई से कैसे बचाया?

उत्तर: गुरुजी ने काजी पीर मिहानिद से फ़ारी, पिंडट हरज से भक्त, राजपूत ज़ार बिंघ से घुड़सवारी और तीरंदाजी सीखी, और उन्होंने भाई अबाह छिंद और भाई ती दा से गुरुमुखी सीखी।

4. कश्मीरी लोगों का भाग्य क्या था? गुरु तेग बहादुर जी ने उन्हें कैसे बदला?

नारंगी क्रांति के बाद उत्तरी कश्मीरी ग्रामीण मुसलमान कहलाना चाहते थे। गुरुजी ने उनकी इस मान्यता को स्वीकार कर लिया।

मैंने उसे अपने हाथ से हिलाया।

5. भिंड गनी की विजय के बाद गुरु गोबिंद राय जी ने कौन सी प्रमुख लड़ाइयाँ लड़ीं?

उत्तर: अनिन दगढ़, के गढ़, लोह गढ़ और फबत गढ़।

6. जानवरों के नाम बताइए।

उत्तर: भाई धरम बिंग, भाई मोहकम बिंग, भाई अबाह बिंग, भाई दया बिंग और भाई बेहिम्मत बिंग।

7. गुरु गोबिंद सिंह ज्योति-जोबट, आप कैसे हैं?

उत्तर: जब गुरुजी सो रहे थे, तो एक पठान ने मौका देखकर गुरुजी की छाती में छुरा घोंप दिया। घाव और गहरा हो गया।

कारण: 7 अक्टूबर 1708 ई. को गुरुजी ज्योति-जोबट का निधन हो गया।

8. देदी हाहुल बनाने में कौन सी सामग्री का उपयोग किया जाता है?

उत्तर- जपजी अबाह, जाप अबाह, स्वतंत्रता की घोषणा कब , हां और हां।

और कहाँ की गई थी?

उत्तर- 1699 ई. में "बखी वालेबदां री आनंदपुर" पुस्तक के लेखक ने लिखी थी।

10. बालपुर के राजा भीम का क्या हुआ, जो चिन्द की सेना द्वारा मारे गए थे?

उत्तर: गुरु के अत्याचारों को देखकर वह स्तब्ध रह गया और अपनी शक्ति दिखाने के लिए उसने अन्य पहाड़ी राजाओं को भेजा।

आइये हम एक गठबंधन बनाएं।

11. नादौन का युद्ध किस कारण हुआ?

उत्तर-नादौन का युद्ध पहाड़ी जनजातियों और मुगलों के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध में गुरु जी ने पहाड़ी जनजातियों को पराजित किया। इसका एक कारण यह है कि गुरु जी से मित्रता स्थापित करने के बाद, बालापुर के राजा भीम छिंद और अन्य पहाड़ी जनजातियों ने मुगल शासन के आगे आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया था। 12. पूर्व-खाल काल और उत्तर-खाल काल से आप क्या समझते हैं?

गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा गुरु की चोली धारण करने से लेकर खाला पंथ के उद्घाटन तक की अवधि को पूर्व-खाला काल कहा जाता है और खाला पंथ के उद्घाटन से लेकर आगे की अवधि को उत्तर-खाला काल कहा जाता है।

13. मुक्त रबाह नदी का पुराना नाम क्या था? इसे यह नाम क्यों दिया गया?

उत्तर: मुक्ता नदी का पुराना नाम बखिद्राना है। आनंदपुर के दूसरे युद्ध में, गुरु जी का साथ छोड़कर बखिद्राना नदी पर मुगलों से लड़ते हुए अपनी जान गंवाने वाले चालीस भंग यहीं शहीद हुए थे। चालीस भंगों की उपस्थिति देखकर, गुरु जी ने उनके नेता भाई महा भंग के सामने नदी का पानी बहा दिया। इसी कारण उन्हें इतिहास में 'चाली मुक्ता' के नाम से याद किया जाता है। उन्हीं की याद में 'बखिद्राना' का नाम 'मुक्ता' हो गया।

14. गुरु गोबिंद सिंह ने उत्तर-ओरंगजे को 'ज़फरनामा' नामक एक क्या आपने बैंक देखा?

पत्र लिखा था।

15. महान संत के पुत्र गुरु गोबिंद सिंह का जन्म गाजी की दो सबसे महत्वपूर्ण कृतियों के नाम बताइए।

उत्तर प्रदेश में हुआ था।, बचित्तर नाटक, ज़फ़रनामा, चिंदी दी वार।

क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

1. गुरु गोबिंद राय जी अपने घजी ने विश्व में अपनी पहचान कैसे बनाई?

जीवन के शुरुआती कुछ दिन पटना में रहे। पटना में वे ऐसे खेल खेलते थे जिनसे पता चलता था कि वे एक महान धार्मिक नेता बनेंगे। वे अपने अनुयायियों को दौड़ और कुश्ती करवाते थे। वे स्वयं भी उन खेलों में भाग लेते थे। वे अपने अनुयायियों को दो समूहों में बाँटकर उन्हें नकली युद्ध लड़ाते थे। वे अपने अनुयायियों के विवादों को सुलझाने के लिए दरबार लगाते थे। गुरु गोबिंद राय जी को देखकर, घुरम के एक मुस्लिम फ़कीर, भीखन शाह ने निश्चय किया कि वे एक ही अवतार में एक महान पैगम्बर बनेंगे।

2. गुरु गोबिंद सिंह जी का उत्तर - हाथी की स्थिति का वर्णन करें।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने दादा गुरु हरगोबिंद सिंह जी का नाम अपनाया। वे स्वयं कलगी गए। गद्दी पर बैठने के बाद वे एक महान राजा बने। उन्होंने अपने महलों को सुंदर और बहुमूल्य पत्थरों से सजाया। उन्होंने एक नगर बनवाया जिसका नाम 'रणजीत नगर' रखा गया।

3. अंतरिक्ष के नियमों का वर्णन करें।

उत्तर-1. 'स्पेस' में प्रवेश करने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को 'पहेली का भाग' पूरा करना होगा। उसके बाद, वह स्वयं को स्पेस कहेगा।

2. प्रत्येक पुरुष अपने नाम में 'बिंघ' शब्द जोड़ेगा और महिला अपने नाम में 'कौर' जोड़ेगी।

3. खाली पिंजरे को 'काकड़', 'किंघा', 'कड़ा', 'कछबेहरा' और 'बकरपण' से भरा जाएगा।

4. व्यक्ति केवल एक ईश्वर में विश्वास रखेगा। वह अन्य देवताओं और मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करेगा।

5. वह सुबह जल्दी उठेगा, स्नान करेगा और पिंजणी का पाठ करेगा।
 6. वह दोनों बच्चों को आशीर्वाद देगा और अपनी कमाई का एक हिस्सा धार्मिक कार्यों के लिए दान भी करेगा।
 7. जब लोग एक दूसरे से मिलेंगे तो वे 'बहगुरु जी का खाला, बहगुरु जी की फबत' गाएंगे।
 8. वह तंबाकू या अन्य नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करेगा। वह हलाल भोजन नहीं खाएगा।
 9. वह अपना चरित्र शुद्ध रखेगा और नैतिकता का पालन करेगा।
 10. वह काला मुखौटा पहनेगा। वह धर्मयुद्ध के लिए तैयार रहेगा।
4. भिंड के युद्ध के क्या कारण थे?

उत्तर-1. पहाड़ी राजा गुरु गोबिंद राय जी की राजनीतिक गतिविधियों को अपने राज्यों के लिए खतरा नहीं मानते थे।

2. गुरु जी मूर्ति पूजा के विरुद्ध नहीं हैं, लेकिन पहाड़ी राजा मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते।
 3. गुरु जी ने मुगल सेना से 500 पठानों को अपनी सेना में भर्ती किया।
 4. आसपास के मुगल कमांडरों ने पहाड़ी जनजातियों को गुरु के खिलाफ भड़काया।
 5. भीम छिंद की गुरु आभा से पुरानी दुश्मनी।
 6. इस युद्ध का तात्कालिक कारण यह था कि भीम छिंद के पुत्र, जो मरणासन्न था, को भिक्षुओं ने पौंटा आभा से सीमा पार करने की अनुमति नहीं दी थी। भिक्षुओं ने भी गुरु आभा से युद्ध करने का निश्चय किया।
5. आनंदपुर का दूसरा युद्ध कब हुआ था? उत्तर : आनंदपुर का दूसरा युद्ध "खेल का वर्णन करें।

1704 ई. में हुआ था। गुरु जी की बढ़ती शक्ति को देखकर पहाड़ी राजा उनसे ईर्ष्या करने लगे। उनके शत्रुओं ने गुरु जी से आनंदपुर छोड़ने को कहा। जब गुरु जी ने उनकी बात अस्वीकार कर दी, तो उन्होंने गुरु जी पर आक्रमण कर दिया, लेकिन गुरु जी ने उन्हें पराजित कर दिया और वहाँ से जाने पर मजबूर कर दिया। भीम छिंद और अन्य पहाड़ी राजाओं ने मुगल सरकार से मदद माँगी। रवींद्रनाथ टैगोर का फौजदार जियर खान भी अपनी सेना के साथ वहाँ आ पहुँचा। जियर खान ने पहाड़ी कबीलों और रिंगरों के साथ मिलकर गुरु जी पर आक्रमण कर दिया।

किले के अंदर से गुरु की सेना के आक्रमण को भिक्षुओं ने सफलतापूर्वक विफल कर दिया। फिर गुरु ने आनंदपुर आभा को चारों ओर से घेर लिया। पराजित होते ही, भिक्षुओं ने युद्ध जारी रखा। भिक्षु आनंदपुर आभा छोड़ना चाहते थे, लेकिन गुरु ने इसकी अनुमति नहीं दी। इसलिए, चालीस भिक्षुओं ने अपना 'एदवा' त्यागकर गुरु का मार्ग छोड़ दिया। अंततः, 21वें दिन गुरु ने आनंदपुर आभा को मुक्त कर दिया। आर, 1704 ई.

6. चमकौर के युद्ध पर टिप्पणी।

उत्तर: नदी पार करने के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी, उनके कुछ पुत्र और उनके बड़े भाई - अजीत सिंह और जुझार सिंह - घनौला और कोटला बिन्हिंग खान, जो हिंदू थे, चमकौर में दाखिल हुए। उनके साथ केवल 40 पुत्र थे।

उन्होंने वहाँ एक छोटी सी गुफा में शरण ली। जब गुरु जी की सेना ने उन पर हमला किया, तो उन्होंने उनका सामना किया और उन्हें मार डाला। गुरु के दोनों भाइयों ने उनका साथ दिया। अंततः योद्धाओं के हमले का सामना करते हुए उन्होंने वीरगति प्राप्त की। पाँच भाइयों में से तीन - भाई आभा बिंग, भाई मोहकम बिंग और भाई बेहिमत बिंग - ने भी यहीं वीरगति प्राप्त की। अंततः गुरु जी के 40 भाइयों में से केवल भाई बिंग ही बचे। जब गुरु जी चमकौर छोड़कर चले गए, तो उन्हें हुक्मनामा की आड़ में काम करने के लिए मजबूर किया गया। भाई दया भांग और भाई धरम भांग उनके साथ गद्दी से बाहर गए। दूसरे पक्ष का भांग लड़ते हुए वहीं शहीद हो गया। गुरु गोबिंद भांग जी माछीवाड़ा,

आलमगीर, दीना और कंगार घूमते हुए बखिद्राना के घर पहुंचे।

7. बखद्राना के युद्ध का वर्णन कीजिए।

उत्तर-चमकुर से निकलकर जब गुरु गोबिंद सिंह जी बखिद्राणे गाँव पहुँचे, तो कई भिक्षु उनके साथ हो लिए। वे भिक्षु जो अंदापुर में गुरु जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने गए थे, वे भी वहाँ पहुँच गए। वे

माई भागो के साथ, वे गुरु की ओर से लड़ने वहाँ गए। उस समय, गुरु के पास लगभग 2,000 सैनिक थे।

भीख बिक्रम। 1705 ई. के उत्तरार्ध में, रवीन्द्रनाथ टैगोर, 10,000 सैनिकों की विशाल सेना के साथ। दीदार जिररी खान ने वहाँ पूजा की। 29 आर,

बखिद्राना के तट पर घमन का युद्ध हुआ। इस युद्ध में गुरु आभा और उनके साथियों ने अद्वितीय वीरता का परिचय दिया। उन्होंने शत्रु को परास्त किया। वहाँ पानी की कमी के कारण मुगलों के लिए युद्ध करना कठिन था। इस कारण मुगलों को पीछे हटना पड़ा और उन्हें हार का सामना करना पड़ा। भवन माई भगोन बुरी तरह घायल हो गए और वे

जिन चालीस भंगों ने उनकी भक्ति की थी, वे शहीद हो गए। लेकिन विजय गुरु जी की हुई। चालीस भंगों की उपस्थिति देखकर, गुरु जी ने

भाई महा बंग के मुखिया भाई उनसे बहुत नाराज़ हुए। उन भिक्षुओं को अब बाइबिल में 'चाली मुक्ता' कहा गया है।

कहते हैं कि उन्हें याद किया जाता है। उनकी याद में बखदराने की बेटी मुक्ता का नाम प्रसिद्ध हुआ।

8. गुरु गोबिंद सिंह जी एक वीर गाजी सेना का नायक एक मजबूत व्यक्तित्व वाला नायक है।

योद्धा और जन्मजात सेनानायक थे। बचपन से ही उन्होंने घुड़सवारी, तलवारबाजी और तीरंदाजी में निपुणता हासिल कर ली थी। उन्होंने किले में रहकर वीर सैनिकों की एक सेना तैयार की। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने संसाधनों से शक्तिशाली मुगल सेना को परास्त करने में बिताया।

उन्होंने एक विशाल युद्ध लड़ा। उन्होंने हर युद्ध में भिक्षुओं का प्रतिनिधित्व किया। वे जानते थे कि कब, कहाँ और कैसे, कितनी कुशलता से युद्ध करना है। भिनगा और बखिद्रण के युद्धों की तरह, उन्होंने हर युद्ध के लिए सही जगह चुनी। उन्होंने एक रक्षात्मक युद्ध लड़ा।

क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 100-120 शब्दों में दीजिए:

1. गुरु गोबिंद सिंह जी उत्तर- 1. एक साधु के जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं?

जन्म एवं इतिहास - गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 ई. को पटना में हुआ था। उनकी माता का नाम गुजरी और पिता का नाम गुरु तेग बहादुर जी था। गुरु जी ने अपने जीवन के प्रारंभिक वर्ष पटना में बिताए।

2. उन्होंने भाषा सीखी - गुरुजी ने काजी पीर मिहानिद से फारी भाषा, पिंड हरज से बकरीद की भाषा, राजपूत ज़ार बिंध से घुड़सवारी और तीरंदाजी की भाषा सीखी और उन्होंने भाई अबाह छिंद और भाई टी दा से गुरुमुखी का ज्ञान प्राप्त किया।

3. गुर्गी की बहन तेबिता जी की शहादत - 1675 ई. कश्मीरी गाँवों और अन्य स्थानों में मुगलकालीन प्रथाओं के कारण, गोबिंद राय के अनुरोध पर, गुरु तेग बहादुर जी ने अपनी सेवाएं देने का फैसला किया। उन्होंने गुरु गोबिंद राय को अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

बडिल्ली में गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का गठन किया गया। 11 नवम्बर, 1675 ई. को गुरु तेग बहादुर और उनके अनुयायी थे वह चांदनी चौक में शहीद हो गए और खलनायक बन गए।

4. गुरुजी का विवाह - कई स्रोतों के अनुसार, गुरु जी का विवाह माता जीतो जी से हुआ था, जिनका दूसरा नाम माता विंद्री था और अम्बरत से विवाह के बाद उनका तीसरा नाम माता अबाह कौर था। गुरु जी के चार पुत्र थे, जिन्हें अबाह जादे कहा जाता है। उनके नाम हैं - अजीत सिंह, अजीत सिंह,

राजा ज़ोरार बिंध है और राजा फबत बिंध है।

5. अन्ना का गठन- गुरु तेगदर जी की शहादत के बाद, कृपाल छिंद ने भिक्खु धर्म की रक्षा के लिए गुरु आभा की सेना को संगठित करना आवश्यक समझा। गुरु जी ने घोषणा की कि यदि भिक्खु के चार पुत्र हों, तो वे उनमें से दो को गुरु आभा की सेना में भर्ती करेंगे और अन्य पशुओं के बजाय उन्हें घोड़े और हथियार भेंट करेंगे। इस प्रकार, गुरु आभा ने शीघ्र ही असंख्य सैनिक और युद्ध के घोड़े एकत्रित कर लिए।

6. राजी बछिन्ह - गुरु जी ने अपने दादा गुरु हरगोबिंद से राजी बछिन्ह को गोद लिया था। वे स्वयं कलगी गए और राजगद्दी पर बैठे। वे एक नगाड़ा लेकर आए जिसका नाम 'रणजीत नगाड़ा' रखा गया।

7. पौंटा में गुरुजी का कार्य - गुरुजी ने यमुना नदी के किनारे एक एकांत स्थान चुना। इस स्थान को 'पौंटा' कहा जाता है।

रिब्खा बाग्या, बाज का अर्थ है 'पैर रखने का स्थान'। गुरु जी ने की को यहीं रखा था⁵²। की और गुरु जी ने यहीं अपनी महत्वपूर्ण रचनाएँ रचीं और अभात के बीच ख्याति बढ़ाई।

8. भिलण से पहले खाला अजना के युद्ध - 1688 ई. में गुरुजी को भिलणगी का युद्ध लड़ना पड़ा। इस युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद, गुरुजी आनंदपुर आए और वहाँ आनंदगढ़, केगढ़, लोहगढ़ और फतेहगढ़ नामक चार किले बनवाए। इसके बाद गुरुजी ने खानजादा रुतम खां और शाहजादा मुइज्जम को पराजित किया।

9. खाला की आज्ञा- 1699 ई. में, गुरु गोबिंद राय जी, जो एक संन्यासी थे, ने खाला की प्रतिज्ञा की। उन्होंने ताबीज़ तैयार किए और चार भाइयों, भाई दया बिंघ, भाई धरम बिंघ, भाई बेहिमत बिंघ, भाई मोहकम बिंघ और भाई अभ बिंघ को चुना। फिर उन्होंने चारों भाइयों से ताबीज़ ले लिए और उनके नाम में 'बिंघ' शब्द जोड़ दिया।

परिणामस्वरूप, बिंघ संन्यासी बन गए और उनका नाम गुरु गोबिंद बिंघ हो गया।

10. उत्तर-खाला काल के युद्ध - खुला के आरंभ के बाद के काल को उत्तर-खाला काल कहा जाता है। इस काल में गुरु जी ने आनंदपुर आभा का प्रथम युद्ध, बिरनोमोह का युद्ध, औली का युद्ध, आनंदपुर आभा का द्वितीय युद्ध, शाही बत्ती का युद्ध, रा का युद्ध, चमकौर आभा का युद्ध और बखिद्रना का युद्ध लड़ा। यहीं से वे गुप्त हो गए।

11. ज्योति-जोत मान - 1708 ई. गुरुजी निन्देड पहुँचे। यहाँ उन्होंने माधोदा को दरांती के रूप में निन्देड भेजा। रवींद्र के फौजदार ने गुरु आभा की हत्या के लिए दो पठान निन्देड भेजे। उनमें से एक ने मौका पाकर गुरु जी के पेट में छुरा घोंप दिया। यह घाव कुछ समय के लिए तो भर गया, लेकिन बाद में धनुष से बाण लगने पर घाव और गहरा हो गया और 7 अगस्त 1708 ई. को गुरु जी का देहांत हो गया।

2. गुरु गोबिंद सिंह गाय को खाली रखने की क्या जरूरत थी?

उत्तर-1. नौ गुरुओं के बच्चों का काम मूर्ति पूजा करना था - गुरु नानक देव जी और उनके गुरु मूर्ति पूजा करते थे।

उन्होंने गायन और नृत्य के अनुष्ठान करके जाति व्यवस्था को भी तोड़ा।

जिस प्रकार गुरु गोबिंद सिंह जी ने साधुओं के बीच मतभेदों को दूर करने तथा उनके बीच के अंतर को साहस, वीरता और धैर्य से भरने का प्रयास किया, मैंने के बारे में सोचा

2. ओरंग असली भारत को इस्लाम की भूमि बनाना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने हिंदुओं पर अत्याचार किए और पवित्र मंदिरों को नष्ट किया। उन्हें अपमानित किया प्रवेश कराया गया। इस प्रकार, हिंदुओं को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया, लेकिन जहाँ गुरु के पिता ने गया और विशेष उपकरणों के साथ मंदिर में हिंदुओं की रक्षा का बीड़ा उठाया, वहीं वे एक छावनी के रूप में एक सैन्य अड्डा भी स्थापित करना चाहते थे।

3. पहाड़ी राजाओं पर निर्भर न रहना - गुरु जी ने पहाड़ी राजाओं के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन नादौन के युद्ध के दौरान वे मुगलों से जा मिले। इस कारण गुरु जी मुगलों पर निर्भर न रहें। इसलिए उन्होंने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए एक स्थान की तलाश की। उन्होंने उनके साथ क्या किया?

4. जाति व्यवस्था समाप्त - भिक्खुओं के पहले नौ गुरुओं ने जाति व्यवस्था को समाप्त कर दिया, लेकिन फिर भी, भिक्खु अभी भी मौजूद हैं।

जाति व्यवस्था अभी तक समाप्त नहीं हुई है, इसलिए गुरु गोविंद सिंह ने जाति व्यवस्था के बंधनों को तोड़कर विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों के बीच दूरी पैदा की।

5. गुरु आभा के जीवन का उद्देश्य - गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी आत्मकथा 'बचित्र नाटक' में कहते हैं कि उनके जीवन का उद्देश्य था

इसका उद्देश्य लोगों में धर्म का प्रचार करना, बुराइयों का उन्मूलन करना और दुष्टों का विनाश करना है। इसी उद्देश्य से स्थान का निर्माण आवश्यक समझा गया।

3. खाली स्थान का क्या महत्व है?

उत्तर-1. गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने से पहले आए गुरुओं के कार्यों की पूर्ति करके उनके कार्यों को पूरा किया।

2. गुरु तेग बहादुर जी के नेतृत्व में सिखों का मन स्वार्थी, लालची और भ्रष्ट हो गया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि वे मन से किसी भी प्रकार का संबंध न रखें।
सिखों का शीघ्र ही विघटन हो गया। क्या?

3. 'खिंडे दी पाहूल' डालने का अधिकार खाली छल्लों को दिया गया। उन्हें दोनों में से किसी एक का चुनाव करने का अधिकार भी दिया गया। छल्लों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ खाली छल्लों का महत्व भी बढ़ता गया।

4. दोनों के बीच अंतर के कारण छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई।

5. ख्वाजा के आगमन के साथ ही भिक्खुओं में एक नई शक्ति का उदय हुआ। अमरत्व के बाद वे स्वयं को भींग कहने लगे और जाति-भेद भूल गए।

6. खुबत के अभाव ने भिक्खुओं में वीरता और साहस की भावना भर दी। इसी कारण गुरु जी के भिक्खुओं ने मुगलों के साथ कई युद्ध लड़े।

7. इस अंतराल की खबर सुनकर पहाड़ी राजा भयभीत हो गए और उन्होंने गठबंधन बनाकर गुरु की शक्ति को चुनौती देने का निश्चय किया। अंतराल के बाद भी गुरु को पहाड़ी राजाओं से कई युद्ध लड़ने पड़े।

8. खिला की स्थापना के साथ ही, भिक्षुओं ने मंदिर के 'ककारों' का अनुसरण करते हुए, अपने बाह्य स्वरूप में आम लोगों से अपनी अलग पहचान बना ली। खिला जाति के पुरुष 'बिंघ' और स्त्रियाँ 'कौर' कहलाने लगीं।

9. संतरियों ने हिंदुओं पर अत्याचार जारी रखा। भारतीयों में से कोई भी ऐसा नहीं था जो उनके अत्याचार का विरोध करता।

इस शून्यता से प्रभावित होकर विश्व के अन्य भागों के लोगों ने भी औरंगजेब के अत्याचार का विरोध करना शुरू कर दिया, जिसके कारण हिंदू धर्म विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गया।

10. भगवान ने मूर्तिपूजा, कर्मकांड, रीति-रिवाज और अंधविश्वास से नाता तोड़ लिया। इसी कारण भगवान ने अंधविश्वास और अज्ञानता का अंत किया।

11. गुरु जी ने गुरु शक्ति, गुरु ग्रंथ साहिब और खाला को विभाजित करके लोकतंत्र की स्थापना की। इस प्रकार गुरु गोबिंद सिंह जी देश के पहले लोकतंत्रवादी बने।

12. अंतरिक्ष के आगमन से बच्चों में साहस, वीरता, निडरता, बहादुरी और आत्म-बलिदान की भावनाएँ जागृत हुईं।

4. गुरु गोबिंद सिंह के युद्ध - गाजी के प्रारंभिक युद्ध काल की लड़ाइयों का वर्णन करें।

खुला के आगमन से पहले लड़े गए युद्धों को पूर्व-खाला काल के युद्ध कहा जाता है, जो इस प्रकार हैं - 1. भिंगा का युद्ध 1688 ई. - बालापुर के राजा भीम छिंद से विवाद के कारण गुरु जी पौंटा आभा चले गए और

अपने अत्याचारों को बढ़ावा दिया। वहाँ भी गुरु ने अपना सैन्य अभियान जारी रखा, जिसे पहाड़ी राजा अपने लिए खतरा नहीं मानते थे। इस युद्ध का तात्कालिक कारण यह था कि भीम छिंद के पुत्र को, जो महल जा रहा था, भिक्षुओं ने रात को पौंटा आभा पार नहीं करने दिया था। जैसे ही पहाड़ी आदिवासी गुरु आभा से लड़ने के लिए और अधिक दृढ़ हो गए, गुरु जी ने पहाड़ी आदिवासियों से लड़ने के लिए भिंगाणी का स्थान चुना। जैसे ही युद्ध शुरू हुआ, औरा के पीर विधु शाह की 500 पठानों की सेना ने गुरु जी का साथ छोड़ दिया। लेकिन गुरु जी ने कुछ और लोगों के साथ युद्ध जारी रखा। उस समय औरा के पीर विधु शाह अपने चार पुत्रों और 700 अनुयायियों के साथ गुरु जी के साथ शामिल हो गए।

22 मार्च, 1688 को नौ घंटे तक युद्ध चला। गुरु जी स्वयं आगे आए और अपनी उपस्थिति का जौहर दिखाया। इससे भिक्षुओं का उत्साह और बढ़ गया। भित्तों जैसे पहाड़ी राज्यों को पराजय का दंश झेलना पड़ा। वे पराजित होकर भाग गए, और अंततः गुरु जी ने शानदार विजय प्राप्त की।

2. नादून का युद्ध, 1690 ई. - नादून का युद्ध पहाड़ी जनजातियों और मुगलों के बीच लड़ा गया था। इस युद्ध में गुरु जी ने पहाड़ी जनजातियों को पराजित किया।

इसका एक कारण यह भी था कि गुरु गोबिंद राय जी से मित्रता स्थापित करने के बाद, बालापुर के राजा भीम छिंद और अन्य पहाड़ी जनजातियों ने मुगलों को हराने का प्रयास किया था।

उन रब्बियों ने भीम छिंद के नेतृत्व में युद्ध का आह्वान किया। जब पहाड़ी रब्बियों ने कर देने से इनकार कर दिया, तो जम्मू के मुगल शासक मियां खान ने 1690 ई. में

बिच अबुल खान के नेतृत्व में पहाड़ी रब्बियों के विरुद्ध एक अभियान भेजा। यह युद्ध

इस बीच, कांगड़ा के राजा बकरपाल छिंद ने अबुलफ खां को पराजित कर दिया। गुरु आभा ने राजा राम सिंह और उनके पहाड़ी कबीलों को पराजित किया। कांगड़ा से 32 किलोमीटर दूर, नदी के किनारे, नादून नामक स्थान पर एक युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में गुरु आभा और उनके सहयोगियों ने अपना पराक्रम दिखाया। अबुलफ खां पराजित होकर मैदान छोड़कर चला गया। नादून की विजय के बाद, भीम छिंद ने गुरु आभा से अबुलफ खां के साथ संधि करने के लिए नहीं कहा। गुरु आभा अपने विश्वासघात से बहुत दुखी हुए।

3. खानजादा रुतम खान का अभियान, 1694 ई.: - मुगल सम्राट औरंगजेब को गुरु की बढ़ती शक्ति का पता चल गया। उसने पिंजा के मुगल फौजदारों को गुरु के विरुद्ध कार्रवाई करने का आदेश दिया। इस आदेश को क्रियान्वित करने के लिए कांगड़ा प्रदेश के फौजदार बादल खान ने अपने पुत्र खानजादा रुतम खान के नेतृत्व में गुरु के विरुद्ध सेना भेजी। उसने 1694 ई. में एक रात अपनी सेना के साथ तलुज नदी पार करके गुरु पर अप्रत्याशित आक्रमण कर दिया। भीख पहले से ही उसका सामना करने के लिए तैयार था। उनके पास रास्ते में केवल कुछ ही दास थे, लेकिन खानजादा और उसके सैनिक भयभीत होकर भाग गए। इस प्रकार, गुरु आभा बिना युद्ध के ही पराजित हो गए।

4. हुनैन खान का अभियान, 1696 ई. - खानजादा की हार के बाद, बादल खान ने अपने बेटे हुनैन खान को, जो खानत में एक प्रमुख व्यक्ति था, 1696 ई. की शुरुआत में आनंदपुर पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इस दौरान, हुनैन खान ने गुलेर और जान के रब्बियों को पराजित किया।

उस पर कर लगाया गया था। उसने कर चुकाने से परहेज़ किया। उसने हुनैन खान के साथ युद्ध लड़ा। भीम

छिंद (बालापुर) और बकरपाल छिंद (कांगड़ा) हुनैन खां से जा मिले। गुरु जी ने अपने कुछ सैनिक हुनैन खां के विरुद्ध भेजे। हालाँकि वे स्वयं शहीद हो गए, लेकिन हुनैन खां पराजित हुआ और वह भी शहीद हो गया।

5. शहजाद मुइज्जम की सैन्य कार्रवाई - मुगल बादशाह औरंगजेब मुगलों की हार नहीं देख सकता था। इसलिए उसने शहजाद मुइज्जम को गुरु और पहाड़ी राजाओं के विरुद्ध भेजा। उसने लाहौर पहुँचकर बरमिजा एग के नेतृत्व में एक विशाल सेना पहाड़ी राजाओं के विरुद्ध भेजी। वह पहाड़ी राज्यों को पराजित करने में सफल रहा।

5. गुरु गोबिंद सिंह जी आइये गाजी के युद्धोत्तर काल की लड़ाइयों पर एक नजर डालें।

द्वारा उत्तर-खाल की स्थापना से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी की मृत्यु तक के काल को उत्तर-खाल काल कहा जाता है। इस काल में अधिकांश गुरु युद्धों में व्यस्त रहे।

1. 1701 ई. में आनंदपुर का युद्ध - पहाड़ी राजाओं की हार से खाला पंथ की स्थापना हुई। खाला की मान्यताएँ पहाड़ी राजाओं के धर्म के भी विरुद्ध थीं। अतः भीलपुर के राजा भीम छिंद ने कहा कि या तो गुरु जी आनंदपुर छोड़ दें या फिर वहाँ छोड़ी हुई ज़मीन भीख माँग लें। गुरु जी ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। 1701 ई. में भीम छिंद और अन्य पहाड़ी राजाओं की सेनाओं ने आनंदपुर पर घेरा डाल दिया। गुरु जी अजीत सिंह और अन्य भिक्षुओं से हार गए। पूरी तरह निराश पहाड़ी राजा गुरु से समझौता करना चाहते थे। गुरु जी पहाड़ी राजाओं से युद्ध करना ही नहीं चाहते थे,

उनके साथ एक संधि हुई और संधि की शर्तों के अनुसार गुरु जी आनंदपुर छोड़कर कीरतपुर के पास बस गए।

दानदाता सदमे की स्थिति में चला गया।

2. बनिमोह का युद्ध, 1702 ई. - राजा भीम छिंद ने घोषणा की कि भिक्खुओं की शक्ति को समाप्त करना आवश्यक है। उन्होंने

मुगलों की शक्ति को समाप्त करने के लिए उन्होंने मुगल सरकार से सहायता मांगी। 1702 ई. के आरंभ में, एक ओर राजा भीम छिंद की सेना ने और दूसरी ओर रवींद्रनाथ टैगोर की सेना ने आक्रमण किया। दोनों पक्षों के गूजरों ने आक्रमणकारियों को खदेड़ दीदार के नेतृत्व में मुगल सेना ने बानाराम पर हमला किया।

दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके भिक्षु युद्ध के लिए तैयार नहीं थे। भिक्षुओं ने शत्रुओं से जमकर युद्ध किया। यह युद्ध एक रात और एक दिन तक चला। अंततः गुरु जी ने शत्रु सेना को परास्त कर दिया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।

3. तलुज का युद्ध, 1702 ई. - यद्यपि गुरु जी बिनरिमोह का युद्ध जीत चुके थे, फिर भी गुरु जी ने बिनरिमोह छोड़ने का निश्चय किया। उन्होंने तलुज नदी पार भी नहीं की थी कि हरि की सेना ने उन पर आक्रमण कर दिया। गुरु जी की सेना ने हरि को दृढ़तापूर्वक पराजित कर दिया। यह युद्ध लगभग चार घंटे तक चला। इस युद्ध में गुरु जी विजयी हुए।

4. औली का युद्ध, 1702 ई. - तलुज नदी पार करने के बाद, गुरु जी और भिक्षु औली के लिए रवाना हुए। राजा भीम छिंद की सेना ने गुरु जी की सेना का पीछा किया। लेकिन गुरु जी ने उन्हें फिर से हरा दिया। चूँकि औली और जाँ गुरु जी के मित्र थे, इसलिए भीम छिंद ने गुरु जी से बातचीत करना ही बेहतर समझा। यह युद्ध 1702 ई. के मध्य में हुआ था। इसके बाद गुरु जी आभा में रहने चले गए। इसके बाद, गुरु जी को कोई और युद्ध नहीं लड़ना पड़ा।

5. अनीं दूर आभा का दूसरा युद्ध, 1704 ई. - गुरु की बढ़ती शक्ति को देखकर पहाड़ी राजा उनसे ईर्ष्या करने लगे। पहाड़ी राजाओं के क्रोध ने गुरु को अनीं दूर आभा छोड़ने के लिए कहा। जब गुरु

जब उनकी माँग अस्वीकार कर दी गई, तो उन्होंने गुरु पर आक्रमण कर दिया। लेकिन गुरु ने उन्हें पराजित कर दिया और उन्हें वहाँ से चले जाने पर मजबूर कर दिया। भीम छिंद और अन्य पहाड़ी जनजातियों ने मुगल सरकार से मदद माँगी। रवींद्रनाथ टैगोर का सेनापति जीर खाँ अपनी सेना के साथ वहाँ पहुँचा। जीर खाँ, पहाड़ी जनजातियों और रिंगहारों ने मिलकर गुरु पर आक्रमण कर दिया। भीखों ने किले के अंदर से हरि की सेना के आक्रमण को विफल कर दिया। फिर हरि ने आनंदपुर आभा को चारों ओर से घेर लिया। भीखों की हार के बाद, भीखों ने एक और युद्ध शुरू कर दिया। भिक्षु अनी दुपुर छोड़कर जाना चाहते थे,

परन्तु गुरु जी नहीं माने, अतः चालीस भिक्षुओं ने अपना 'एदवा' घोषित करते हुए गुरु जी का मार्ग छोड़ दिया। अंततः 21 दिसम्बर, 1704 ई. को गुरु जी ने अपना मार्ग बदल लिया।

माता गुजरी के अनुरोध पर गुरु जी ने उनके पिता को रिहा कर दिया।

6. शाही बत्ती का युद्ध - जैसे ही मुगलों को पता चला कि भिक्षुओं ने आनंदपुर खाली कर दिया है, उन्होंने आनंदपुर पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने भिक्षुओं का पीछा भी किया। गुरु जी ने अपने भिक्षु उदय सिंह को आक्रमण रोकने का आदेश दिया। उन्होंने अपने 50 साथियों के साथ शाही बत्ती स्थल पर भिक्षुओं की एक विशाल सेना का नेतृत्व किया।

वे लड़े। हालाँकि उन्होंने अपनी जान गँवा दी, लेकिन उन्होंने हज़ारों लोगों को मरने नहीं दिया।

7. रा का युद्ध - जब गुरु जी और उनके साथी रा नदी पर पहुँचे, तो भेरी नदी उनके पास आकर रुक गई। गुरु जी ने अपने एक पुत्र भीख झिन भीन रिंगरेटा (भाई जैता जी) और लगभग 100 भीखों को नदी से युद्ध करने के लिए भेजा। उन भीखों ने बड़ी ताकत से नदी का मुकाबला किया। उस युद्ध में भेरी नदी को भी नुकसान पहुँचा। नदी के बीचों-बीच बाढ़ आ गई। सैनिक नदी में गिर गए और नदी भी बह गई। इस भगदड़ के बीच गुरु के दो छोटे भाई ज़ोरार सिंह और फबत सिंह, और माता गुजरी जी उनसे अलग हो गए।

8. चमकौर का युद्ध , 1705 ई. - रा नदी पार करने के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी, उनके कुछ भाई और उनके बड़े भाई अजीत सिंह, जुझार सिंह घनौला और कोटला बिन्हिंग खान हिंदू के रूप में चमकौर में दाखिल हुए। उनके साथ केवल 40 भाई थे। उन्होंने वहाँ एक छोटे से किले में शरण ली। जब हरि की सेना ने उन पर हमला किया, तो उन्होंने उनका सामना किया और उन्हें हरा दिया। गुरु सिंह जी के दोनों भाइयों ने अपनी लड़ाई में बड़ी बहादुरी दिखाई। अंततः, हरि द्वारा सिर काटे जाने पर वे शहीद हो गए। पाँच प्यारे भाइयों में से तीन भाई,

भाई मोहकम बिंघ, भाई बेहिमत बिंघ भी यहीं शहीद हुए। अंत में, गुरु जी के 40 भाइयों में से केवल पिंज बिंघ ही बचे। उन्होंने हुक्मनामा के अनुसार गुरु जी को चमकौर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। भाई दया बिंघ और भाई धरम बिंघ उनके साथ गढ़ी से बाहर चले गए। अन्य भाई वहाँ लड़ते हुए शहीद हो गए। गुरु गोबिंद बिंघ जी माछीवाड़ा, आलमगीर, दीना और कांगड़ में समय बिताने के बाद बखिद्राना गाँव चले गए।

9. बखदराना की लड़ाई (रे मुक्त रबाह) , 1705 ई. - चमकौर छोड़ने के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी ने बखदराना को हराया।

जब वे नदी पर पहुँचे, तो बहुत से भिक्षु उनके साथ हो लिए। जो भिक्षु आनंदपुर में गुरु जी से मिलने गए थे, वे भी वहाँ गए। माई भागो, गुरु जी की ओर से लड़ने के लिए 10,000 भिक्षुओं की एक विशाल सेना लेकर वहाँ पहुँचीं। 1705 ई. में भिक्षुओं का नदी पर भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में गुरु जी और उनके अनुयायियों ने अपनी गुरु के पास लगभग 2,000 पुस्तकें थीं। अद्वितीय शक्ति का परिचय दिया और शत्रु को परास्त

रबिंद का दीदार जिरीर खान ने वहां पूजा की. 29 किया। वहाँ पानी की कमी के कारण मुगलों के लिए युद्ध करना कठिन हो गया। मुगल हार गए और डूब गए। माई भागो बुरी तरह घायल हो गई और उनके 40 साथी शहीद हो गए। लेकिन जीत गुरु जी की हुई। गुरु

40 भांगों की उपस्थिति देखकर, उन्होंने उनके नेता भाई महा भांग के सामने 'येड़ा' (एक पवित्र पत्थर) तोड़ दिया।

भिक्षुओं को अब शास्त्रों में 'चली मुक्ते' के नाम से याद किया जाता है। उन्हीं की स्मृति में बखिद्रण की पुत्री का नाम मुक्ता पड़ा।

6. गुरु गोबिंद सिंह घ जी का चरित्र ज्ञात नहीं है।

उत्तर-1. गुरु गोबिंद सिंह को पिंजा के लोगों में सबसे महान योद्धा और महान शक्ति का मालिक माना जाता है।

वहाँ हैं।

2. वह एक उच्च कोटि के व्यक्ति, महान संगीतकार, वीर योद्धा, महान विद्वान और उच्च कोटि के महान दार्शनिक थे।

3. वह कवच पहनते थे और उनके सिर पर तलवार होती थी। उनके हाथ में तलवार होती थी। इसीलिए उन्हें 'कलगीधर दे मेश' या 'बछीबताँ अजान वाला' के नाम से याद किया जाता है।

4. गुरु जी ने असाधारण साहस, निडरता और आत्मविश्वास का परिचय दिया। उन्होंने पहाड़ी जनजातियों और मुगलों से युद्ध किया और औरंगज़ेब को 'ज़फ़रनामा' नामक पत्र उन्होंने अपनी बात कहने में ज़रा भी संकोच नहीं किया। लिखकर असाधारण साहस, धैर्य और निडरता का परिचय दिया।

5. गुरु जी लिदान की मूर्ति नहीं हैं। उन्होंने अपने पिता, चार बेटों, माँ और अपनी प्यारी बहनों को धर्म से कुरान की शिक्षा दी।

6. गुरु लोगों के साथ विनम्रता और प्रेम से पेश आते हैं। वे अहंकारी या शेखीबाज़ नहीं होते। वे स्वयं को संसार की संतान नहीं मानते।

7. गुरु आभा की उदारता और अहिंसा के कारण ही मुस्लिम योद्धा विधु शाह, बिनहिंग खान, नी खान और गनी खान गुरु के मित्र बन गए। गुरु की सेना ने मुसलमानों का भी वध किया।

8. गुरु गोबिंद सिंह जी को पिंजाई, हिंदी, बंगाली और फ़ारसी भाषाओं का पूरा ज्ञान था। वे एक उच्च कोटि के कवि थे। 'जपु अभ', 'बच्चितर नाटक', 'जफ़रनामा', 'अकाल उत्त', 'शशतर नाम माला', 'चिंदी दी वार' उनकी उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। वहाँ रचनाएँ हैं।

9. गुरु गोबिंद सिंह जी एक महान संगीतकार थे। इसका सबसे बड़ा प्रमाण गुरु आभा के माध्यम से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। सिखों जैसी निम्न जातियों को भी नया जीवन मिला। गुरु जी के अनुयायियों में असाधारण उत्साह था। जिन लोगों ने कभी तलवार नहीं पकड़ी थी, वे भी सर्वोच्च कोटि के योद्धा बन गए।

10. उन्होंने लोकतंत्र के सिद्धांतों को बढ़ावा दिया।

11. गुरु जी के एक योग्य और प्रभावी नायक होने का महान प्रमाण इस तथ्य में मिलता है कि उन्होंने जीवन भर अपने संसाधनों से शक्तिशाली मुगल सेना का मुकाबला किया।

12. उन्होंने अपने शिष्यों को परमपिता परमेश्वर का जप करने, अपनी पवित्रता को शुद्ध रखने, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से मुक्त रहने को कहा।

चलो भी।

13. गुरु गोबिंद सिंह जी अपने पूर्वजों के एक महान धार्मिक नेता और एक महान गुरु थे। इस प्रकार, गुरु गोबिंद सिंह जी एक महान व्यक्तित्व के धनी थे।

7. चमकौर, आभा और बखदराणे के युद्ध की स्थिति क्या है?

गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा लड़े गए चमकौर और बखदराणे के युद्ध उत्तर खाला काल के हैं।

युद्ध होते रहते हैं।

चमकौर का युद्ध, 1705 ई. - रा नदी पार करने के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी, उनके कुछ भाई और उनके बड़े भाई अजीत सिंह, जुझार सिंह, घनौला और कोटला बिन्हिंग खान चमकौर में दाखिल हुए। उनके साथ केवल 40 भाई थे। उन्होंने वहाँ एक छोटे से किले में शरण ली। जब हरि की सेना ने उन पर आक्रमण किया, तो उन्होंने उनका सामना किया और उन्हें पराजित किया। गुरु सिंह जी के दोनों भाइयों ने युद्ध में अदम्य साहस का परिचय दिया। अंततः हरि द्वारा सिर काटे जाने पर वे वीरगति को प्राप्त हुए। पाँच प्यारे भाइयों में से तीन भाई,

भाई मोहकम बिंघ, भाई बेहिमत बिंघ भी यहीं शहीद हुए। अंत में, गुरु जी के 40 भाइयों में से केवल पिंज बिंघ ही बचे। उन्होंने हुक्मनामा के अनुसार गुरु जी को चमकौर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। भाई दया बिंघ और भाई धरम बिंघ उनके साथ गढ़ी से बाहर चले गए। अन्य भाई वहाँ लड़ते हुए शहीद हो गए। गुरु गोबिंद बिंघ जी माछीवाड़ा, आलमगीर, दीना और कांगड़ में समय बिताने के बाद बखिद्राना गाँव चले गए।

बखदराना की लड़ाई (रे मुक्त रबाह) , 1705 ई. - चमकौर छोड़ने के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी ने बखदराना को हराया।

जब वे नदी पर पहुँचे, तो कई भिक्षु उनके साथ हो लिए। जो भिक्षु गुरु जी से मिलने आनंदपुर गए थे, वे भी वहाँ गए। गुरु जी की ओर से माई भागो, 10,000 भिक्षुओं की विशाल सेना लेकर वहाँ गई। 1705 ई. में बखिद्राना नदी के तट पर एक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में गुरु जी और उनके अनुयायियों ने अपनी अद्वितीय शक्ति का गुरु के पास लगभग 2,000 पुस्तकें थीं। परिचय दिया और शत्रु को परास्त किया। वहाँ पानी की

रबिंद का दीदार जिरीर खान ने वहाँ पूजा की. 29 कमी के कारण मुगलों के लिए युद्ध करना कठिन हो गया। मुगल हार गए और डूब गए। माई भागो बुरी तरह घायल हो गई और उनके 40 अनुयायी शहीद हो गए। लेकिन जीत गुरु की हुई। 40 अनुयायियों की उपस्थिति देखकर, गुरु ने उनके नेता भाई महाभंग की उपस्थिति में उनसे 'एदवा' फाड़ दिया।

अब शास्त्रों में भिक्षुओं को 'चली मुक्ते' के नाम से याद किया जाता है। उन्हीं की स्मृति में बखिद्राना की पुत्री का नाम मुक्ते पड़ा।

योगदान: हरदीबिंदर बिंग (टेट ब्रदर पर्व, मथायोम) ए.आई.आर.टी.; पिंजा

रणजीत कौर (ला. इब्ताहा) . बैम ट्रे) . कूल चिन्ना, गुरदापुर और

(. मनदीप कौर .किन. .दखा लुब्धाना.